कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 10 जनवरी, 2026

ज़ायद मौसम में मूंग की खेती: उन्नत उत्पादन तकनीक

दुर्गेश कुमार मौर्य[1], राजेश चन्द्र वर्मा[2], तरुण कुमार[3] और देवेश कुमार[4]
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, सन्तकबीर
[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष (पादप रोग विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, सन्तकबीर
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियन्त्रण), कृषि विज्ञान केंद्र, सन्तकबीर
[4]विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि वानिकी), कृषि विज्ञान केंद्र, सन्तकबीर
***E-mail: tejendrarsm@gmail.com**

मूंग भारत की प्रमुख दलहनी फसलों में से एक है, जो अपने उच्च पोषण मूल्य, कम अवधि तथा मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने वाले गुणों के लिए जानी जाती है। यह फसल खरीफ, रबी (सीमित क्षेत्रों में) एवं ज़ायद तीनों मौसमों में उगाई जाती है। विशेष रूप से ज़ायद मौसम में मूंग की खेती किसानों के लिए एक लाभकारी एवं टिकाऊ विकल्प के रूप में उभर रही है, क्योंकि इस अवधि में खेत प्रायः खाली रहते हैं।

मूंग की जड़ों में उपस्थित राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर कर मिट्टी में उपलब्ध कराते हैं, जिससे न केवल मूंग की उपज बढ़ती है, बल्कि अगली फसल को भी लाभ मिलता है। इसी कारण मूंग को फसल चक्र में शामिल करना वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माना गया है।

मूंग का महत्व

- मूंग दाल में 22–24 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है
- यह शीघ्र पकने वाली (60–70 दिन) फसल है
- ज़ायद मौसम में खाली भूमि का सदुपयोग
- मिट्टी की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा में सुधार
- कम लागत में अधिक लाभ की संभावना
- फसल विविधीकरण हेतु उपयुक्त

जलवायु आवश्यकता

मूंग की सफल खेती के लिए गर्म एवं शुष्क जलवायु अनुकूल होती है।

- उपयुक्त तापमान: 25–35°C
- अत्यधिक ठंड, पाला एवं जलभराव फसल के लिए हानिकारक
- फूल एवं फल बनने की अवस्था में तेज हवा से नुकसान संभव

भूमि का चयन

मूंग की खेती के लिए हल्की से मध्यम दोमट मिट्टी सर्वोत्तम रहती है।

- खेत में उचित जल निकास आवश्यक
- मिट्टी का pH मान 6.5–7.5 उपयुक्त
- क्षारीय भूमि में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी देखी जा सकती है।

उन्नत किस्में (ज़ायदहेतु)

- पंत मूंग-5
- पंत मूंग-6
- PDM-139 (सम्राट)
- IPM 02-3
- SML-668

ये किस्में कम अवधि में पकने वाली, अधिक उपज देने वाली तथा पीला मोज़ेक रोग के प्रति सहनशील हैं।

भूमि की तैयारी

एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से

- 2–3 जुताइयाँ कल्टीवेटर से
- अंतिम जुताई में 5–7 टन/हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर खाद मिलाएँ
- खेत को समतल कर लें

बुवाई का समय एवं विधि

- ज़ायद बुवाई समय: मार्च प्रथम पखवाड़ा से अप्रैल प्रथम सप्ताह
- बीज दर: 20–25 किग्रा/हेक्टेयर
- कतार दूरी: 25–30 सेमी
- पौधा दूरी: 10 सेमी
- बुवाई गहराई: 4–5 सेमी

बुवाई सीड ड्रिल या कूड़ विधि से करें।

बीज उपचार

अच्छे अंकुरण एवं रोग नियंत्रण हेतु बीज उपचार आवश्यक है:

- कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किग्रा बीज
- इसके बाद राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर से उपचार

उर्वरक प्रबंधन

मूंग दलहनी फसल होने के कारण नाइट्रोजन की आवश्यकता कम होती है।

प्रति हेक्टेयर उर्वरक मात्रा

- नाइट्रोजन: 20 किग्रा
- फास्फोरस: 40–50 किग्रा
- व्यवहारिक रूप से DAP 100 किग्रा/हेक्टेयर पर्याप्त

सूक्ष्म पोषक तत्व

- जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हेक्टेयर (3 वर्ष में एक बार)

सिंचाई प्रबंधन

ज़ायद मूंग में 4–5 हल्की सिंचाइयाँ आवश्यक होती हैं।

महत्वपूर्ण अवस्थाएँ:

1. बुवाई के बाद
2. शाखा बनने पर
3. फूल आने पर
4. दाना भरने पर

जलभराव से अवश्य बचें।

खरपतवार प्रबंधन

प्रारंभिक 30–35 दिन फसल के लिए संवेदनशील होते हैं।

- 20–25 दिन पर एक निराई-गुड़ाई
- रासायनिक नियंत्रण:
- Pendimethalin 30% EC @ 1 लीटर/एकड़ (बुवाई के 2–3 दिन बाद)

कीट एवं रोग प्रबंधन

मुख्य कीट: सफेद मक्खी, थ्रिप्स
मुख्य रोग: पीला मोज़ेक रोग
रोकथाम:

- रोगरोधी किस्मों का चयन
- समय पर कीट नियंत्रण
- संक्रमित पौधों को हटाना

कटाई एवं उपज

- फलियाँ पकने पर भूरे रंग की हो जाती हैं
- 2–3 तुड़ाइयों में कटाई करें

औसत उपज

- 8–10 क्विंटल/हेक्टेयर
- उन्नत तकनीक से 12 क्विंटल/हेक्टेयर तक

●●●